संगवारी

२०२२-२३

वार्षिक पत्रिका

हम इस साल का सफ़र आप सभी दोस्तों,
शुभचिंतकों और संगवारी मन से साँझा करते हैं...

स्वास्थ्य सेवायें

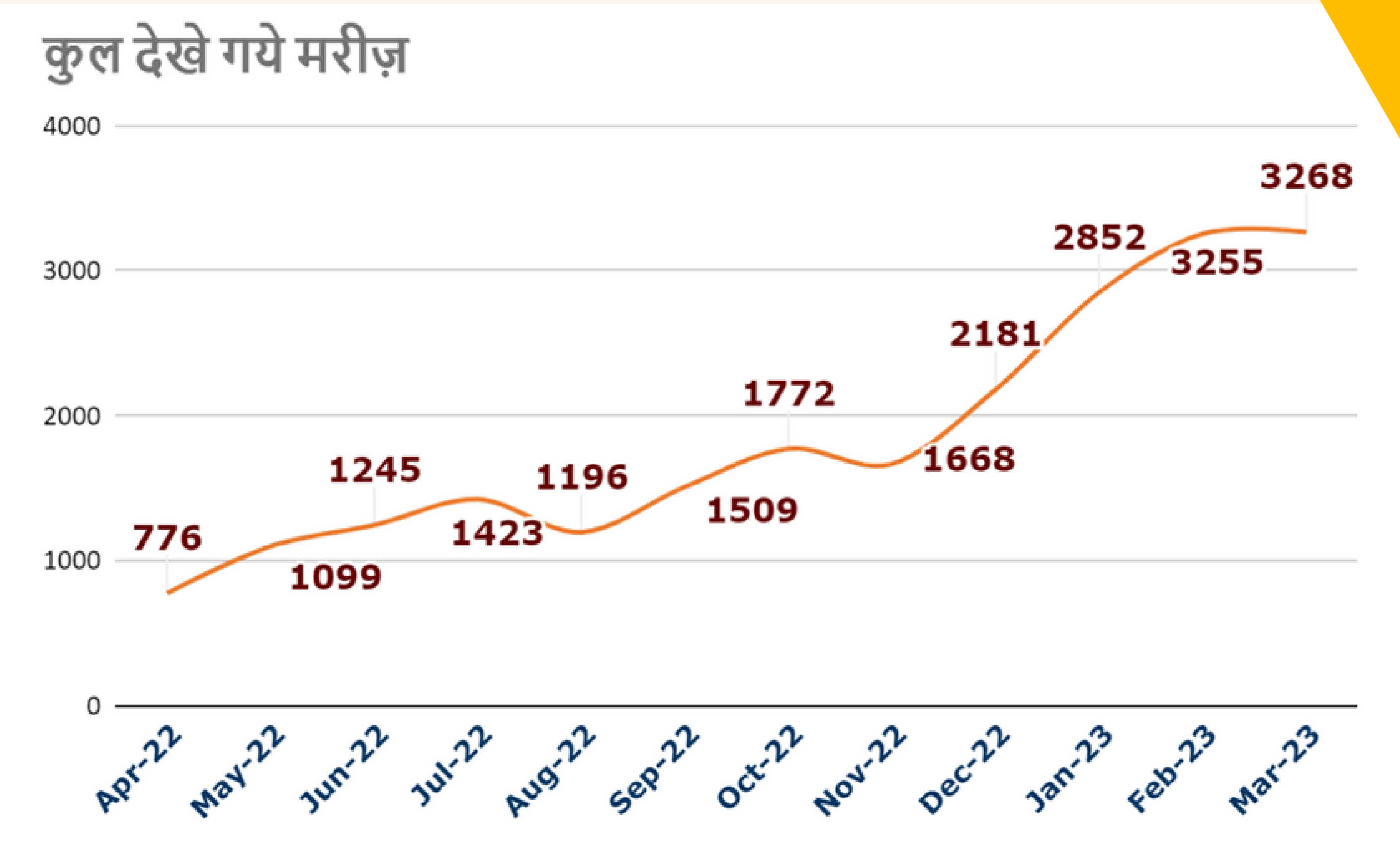

हमने इस साल **22,244** मरीजो को स्वास्थ्य सेवा प्रदान की-जिसमे जाचं, निदान, और उपचार दिये गये। हमने

- तीन स्वास्थ केंद्र (क्लिनिक)- अमगसी, बिनिया,और कुनिया,
- चार दूरदराज स्वास्थ केंद्र (क्लिनिक),
- दुरदराज आश्रम स्कूल, और स्कूल में हेल्थ कॅम्प ,
- सरकारी व्यवस्था में ओ.पी.डी./क्लिनिक किये।

खास करके हम बताना चाहेंगे-

- **घर पर स्वास्थ्य सेवा (होम व्हिजीट)**- डॉक्टर, नर्स, प्रशिक्षित स्वास्थ्य संगी और सुपरवायझर इन्होने घर जाकर मरीज देखे
- **विशेषज्ञ परामर्श (मरीज देखे)**- विशेषज्ञ द्वारा NCD, दर्द निवारण और पेलियेटिव केयर,टी.बी. और अन्य मरीजो का फॉलो अप किया गया।

स्वास्थ्य सेवायें

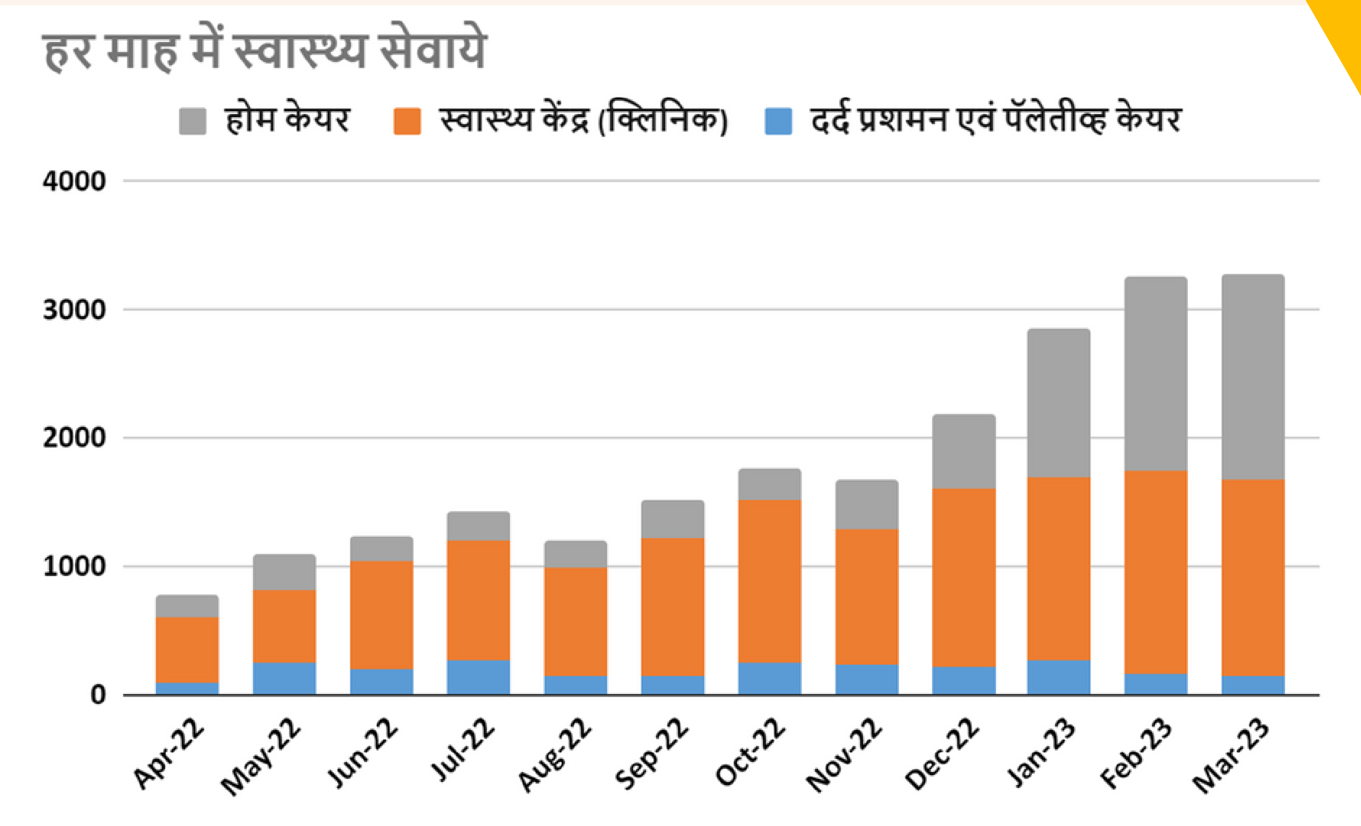

सप्ताह में एक दिन बुधवार को खुल रहा ओपीडी

मेडिकल कॉलेज में दर्द निवारक केन्द्र भी हुआ शुरू

नवभारत न्यूज | अंबिकापुर.
www.navbharat.news

मेडिकल कालेज चिकित्सालय में प्रत्येक बुधवार को दर्द निवारक व उपशामक देखरेख केन्द्र का संचालन हो रहा है. इस सुविधा के साथ ही अम्बिकापुर प्रदेश का पहला मेडिकल कालेज भी बन गया है. जहां दर्द निवारक केन्द्र संचालित है.

चिकित्सालय प्रबंधन के द्वारा मरीजों की संख्या बढ़ने पर केन्द्र संचालन दिवस में बढ़ोतरी किये जाने की योजना है. अस्पताल अधीक्षक डॉ. लखनपुर सिंह ने बताया कि दर्द निवारक और उपशामक केन्द्र में डॉ. शिल्पा खन्ना सेवा दे रही है. मेडिकल कालेज में बुधवार व शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र नवापारा में सोमवार, मंगलवार व गुरूवार को यह ओपीडी संचालित हो रही है.

असहनीय दर्द पर 21 कैंसर रोगी मिले

अस्पताल प्रबंधन के मुताबिक दर्द निवारण केन्द्र से अभी तक सात सौ से अधिक मरीजों को परामर्श मिला है. जिसमें से असहनीय दर्द होने पर 21 नये कैंसर मरीजों की पहचान हुई. मरीजों को निःशुल्क दवा का भी वितरण किया गया. ओपीडी में 415 मरीज पहुंचे, जबकि चिकित्सक से फोन पर 332 मरीजों को सलाह मिली. आवश्यकता पड़ने पर मरीज चिकित्सक के मोबाइल नम्बर 9560940646 पर संपर्क कर सकते हैं.

मील के पत्थर : प्रमुख उपलब्धी

- **अमगसी केंद्र (क्लिनिक)** – नवीकरण करके ज्यादा सेवाएं ज़्यादा दिन देनी शुरू की
- टेली-कन्सल्टेशन गंभीर NCDs अन्य स्पेशालिटी के लिये शुरू हुवे, मरीज सपोर्ट समूह शुरू हुवे
- अंबिकापुर मेडिकल कॉलेज के इतिहास में पहली बार दर्द निवारक केंद्र शुरू -मॉर्फिन दवा उपलब्ध हुई
- 40-45 गाव पारा स्वास्थ्य संगी नियुक्ती, प्रशिक्षण और उनका काम शूर हुवा
- आश्रम स्कूल, स्कूल में स्वास्थ्य जागृती और स्वास्थ्य जाचं उपचार कॅम्प शुरू किये

प्रशिक्षण- नियमित सिखाना

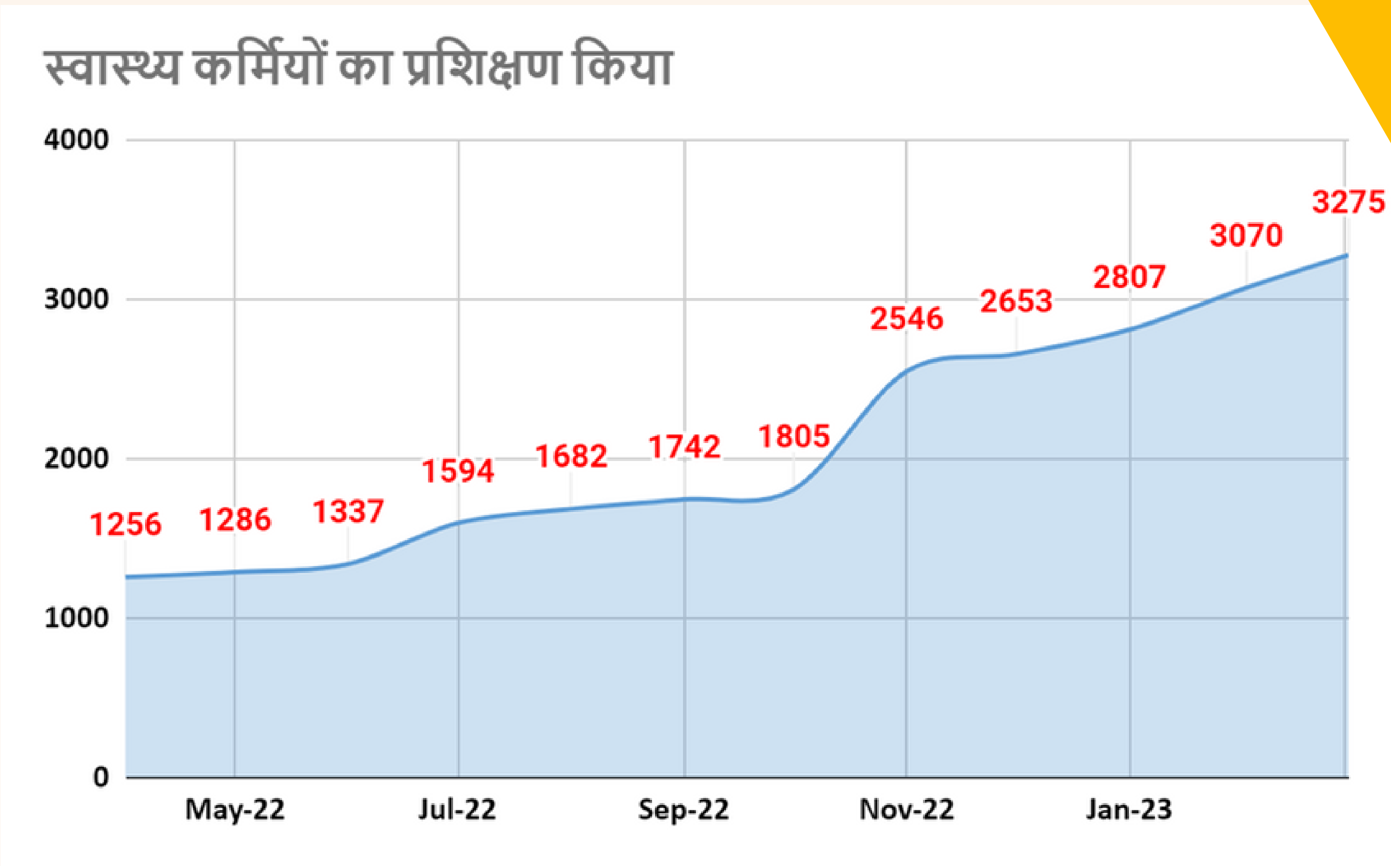

इस साल भी हमने कर्मियों का प्रशिक्षण किया और उन्हे अच्छे से मरीज़ देखने और उपचार करने में मदद की-

- संगवारी के साथीयो का नियमित माह में 2-3 और जरूरत अनुसार प्रशिक्षण किया गया,
- हमने सिर्फ सरगुजा या सुरजपूर जिले के स्वास्थ्यकार्मियो का प्रशिक्षण नही किया बल्की पुरे छत्तीसगड के स्वास्थ्यकार्मियो का प्रशिक्षण लिया गया,
- इसमे निवासी सरकारी डॉक्टर, स्पेशालिस्ट, समुदाय स्वास्थ्य अधिकारी, नर्स, मितानीन (आशा), मितानीन ट्रेनर, अन्य स्टाफ का विविध क्लीनिकल विषयोपर प्रशिक्षण किया

कहानियाँ - फिल्ड से

नामुमकिन- से- मुमकिन तक का सफ़र

पुटा के स्वास्थ्य संगी उर्मिला दीदी के साथ भ्रमण करते वक़्त हमे एक मरीज मिली जिसे सिकल सेल डिसीज की बिमारी थी; उसे अब तक एक भी बच्चा नहीं था क्योंकि उसके अब तक हुए तीनो भी बच्चो की मृत्यु पेट में रेहते हुए 7-8 वे महीने में हो जाती थी| उसे हमने समझाया की उनको दवाई की जरूरत रहेगी और गर्भावस्था की शुरुआत होने से पहले ही उन्हें गोलियां खाने की जरूरत होगी| इस बार उनका चौथी बार जचकी था और छटा माह चल रहा था| हमने उसे संगवारी क्लिनिक- अस्पताल जाकर दवा लेने की सलाह दी, बहुत पीछे भी पड गए, पर उसके पति और सास को हमारे सलाह पर शक था, उनका कहना था की तुम सभी लोग अस्पताल जाकर खून की मांग करोगे, ऐसे पहेले भी हुआ है; सिकल बिमारी में खून ही इलाज है और हम बार बार इसको खून चढाने के लिए नहीं ले जा सकते है| फिर मैंने उर्मिला दीदी को उनका ध्यान रखने को कहा और लगातार मिलते रहने को कहा और खुद वापस चली गयी।
जैसे मुझे हर हफ्ते में स्वास्थ्य संगियों का फोलो अप करने करना होता है; मै अगले हफ्ते भी पुटा पारा गयी इस बार् हम तीनजन फोलमती दीदी, उर्मिला दीदी, और मै पारा भ्रमण कर रहे थे| हम जान बुझ कर हमारे यह सिकल सेल मरीज के नहीं गए; क्योंकि उनके घर में बहुत शान्ति थी और कल ही तो उर्मिला दीदी उनको मिलकर आई थीं; उन्हें हल्का खून माहवारी के रस्ते से जा रहा था, जिसके लिये उर्मिला दीदी ने उन्हें फिर से अस्पताल जाने की सलाह दी थी; जिसे उसके परवार ने बिलकुल नकार दिया था| इसीलिए हम लोग आज उनके घर के आजू बाजू के घर में ही भ्रमण कर रहे थे| ऐसे ही एकाएक उनके घर से जोर जोर से रोने की आवाज आने लगी, बच्चा ख़तम हुआ – खून ज्यादा जा रहा है ऐसे बार बार चिल्लाते हुई उसकी सास बाहर आई | तब हम उसके घर गए, तो दीदी को बहुत ही खून जा रहा था; वो बिलकुल सुस्त हुई थी, 6-7 महीने का बच्चा तो मृत था, उसके बाजू में पड़ा था| नार (गर्भनाल) काटने वाले आये ही थे, उन्होंने नार काटा तो उसके बाद वह हमारे सिकल सेल मरीज को उठा कर पानी पीला रहे थे| हम तीनो ने अब अस्पताल जाने की रट लगायी, जिस तरह खून लगातार बह रहा था, मुझे बहुत ही डर लग रहा था| मैंने डॉ. अभिजित सर को फोन लगाकर एम्बुलेंस से कैसे ले कर जाये, अस्पताल में सुविधा होगी या नहीं, कहाँ जाना होगा उसका पूरा पता लगाया|

कहानियाँ - फिल्ड से

उनको एक बार पूछा की अपस्ताल चलोगे या नहीं उन्होंने हमेशा की तरह मना कर दिया। पर मैंने एक भी नहीं मानी, मैंने और हमारे 2 स्वास्थ्य संगियों ने वही के पडोसी से बोलकर 108 को फोन लगाकर एम्बुलेंस बुलवाया।उसे आने में अभीभी 1-1.5 घंटा देरी थी, तब तक हम उसको और उसके घर वालों को मानाने लगे; बार बार uterine massage करते हुए मै और दीदियाँ उनसे बात कर रही थी। हमारे पास ग्लव्स और oxytocin की दवा नहीं थी और सभी लोगों के सामने कुछभी बड़ा इलाज करने का टेंशन भी आ रहा था। तो सिर्फ massage करते हुए हम उसे मना रहे थे की वह अस्पताल चली जाये; फिर अभीभी 1 घंटा होने के बाद भी खून रुकने का नाम नहीं ले रहा था तो गाँव के दाई ने भी बताया यह परेशानी गंभीर है, ये लडकियां बता रही है जो सही है आप इसे अस्पताल लेकर जाओ। तब उसकी सास ने उसके कपडे बाँधने की तय्यारी शुरू की। उसका पति तो अभी तक खून तो मै नहीं दूंगा की रट लगाये बैठा था; जब दाई और सास ने उसको ड़ाटा तो वह कुछ कुछ सुनाने लगा। जब अम्बुलंस पहुंची तो हम उसे स्ट्रेचर पर बिठा ही रहे थे तो, खुद मरीज भी बात करने लगी की मै तो अस्पताल नहीं जाउंगी। हम तीनोभी और टेंशन में आ ए, क्या बोले नहीं समझ आ रहा था। पर गाँव के साथी, जो आजू बाजु में जमा थे; उन्होंने उसे होंसला देना शुरू किया । उसे मन बुझा कर एम्बुलेंस में बैठाया; अभिजित सर को और विश्वजय भैया को जब मैंने फ़ोन करा की मरीज एम्बुलेंस में बैठ गयी है और एम्बुलेंस अब अस्पताल के लिए निकल गयी है। तब तक हम तीनो को भी विश्वास नहीं हो रहा था की सचमुच हमारी मरीज अस्पताल में भर्ती के लिए चली गयी। गाँव में इस तरह सभी का साथ मिलना हम तीनो को जरुरी लगा; हमारी 3-4 घंटे की मेहनत अब रंग लाएगी जब वह मरीज अपनी सिकल बिमारी की गोलियां शुरू करेगी; और उसके ससुराल वाले उसे उसके बिमारी साथ स्वीकार करेंगे। मै जानती हूँ यह इतना आसान नहीं है; पर सभी के बेहतरीन स्वास्थ्य के लिए काम करते रहना तो हमरा कर्त्तव्य है।

- प्रिया कश्यप, सुपरवाइजर, संगवारी

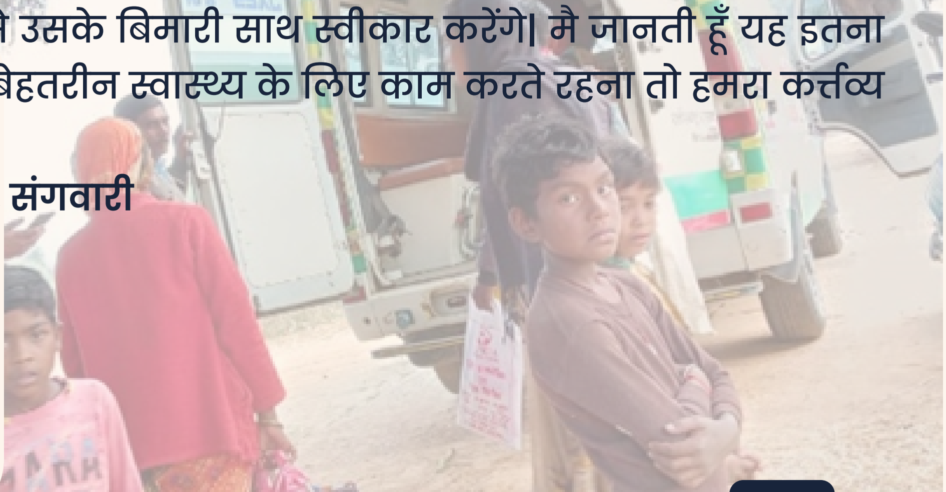

कहानियाँ - फोटो

स्कूल स्वाथ्य चेक अप कॅम्प - डॉक्टर द्वारा बच्चो का चेक अप करते हुवे

टी.बी मरीज को घर में जाकर सेवाये - होम व्हिजीट करते सुपरवायझर

मरीज सपोर्ट समूह मीटिंग में डॉक्टर जानकारी देते हुवे

डॉक्टर स्वास्थ्य संगी का बी.पी. मापाने का प्रशिक्षण लेते हुवे

संपर्क में बने रहे !

9340312605

sangwari.contact@gmail.com

https://sangwari.net

सरगुजा ऑफिस – घर W-12 ,अंबिकापुर, जिला: सरगुजा छत्तीसगड- 497001
रजिस्टर ऑफिस – 36-D, सूर्या अपार्टमेंट, सेक्टर -13, रोहिणी , नई देल्ही – 110085